Volume 12, Issue II, March 2023, ISSN: 2277-1255
BHARTIYAM INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION & RESEARCH
A quarterly peer reviewed International Journal of Research & Education

सामाजिक परिवर्तन हेतु शिक्षा की उपादेयता

– डॉ.नवीन आर्य,

प्रस्तावनाः–

शिक्षा एक ऐसा तत्त्व है, जो मानव का सर्वांगीण विकास करती है, यह नैतिक चरित्र का भी निर्माण करती है। शिक्षा वह है, जो हमें केवल सूचनाएँ नहीं देती वरन् हमारे जीवन और सम्पूर्ण सृष्टि में तादात्म्य स्थापित करती है। हमारे भारतीय समाज में शिक्षा को सदैव ही महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्र की आवश्यकताओं तथा जनमानस की आकांक्षाओं के अनुरूप देश की शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन लाने की दिशा में समय समय पर अनेक सार्थक प्रयास किए गए हैं राष्ट्र के सभी लोगों को बिना किसी भेदभाव के समान गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्राप्त हो सकें इसके लिए राष्ट्र कृत संकल्प है। ''प्रजातान्त्रिक समाजवादी विचारधारा को पोषित करने की दृष्टि से राष्ट्र के सभी नागरिकों का सर्वांगीण विकास अत्यन्त आवश्यक है।''[1]

मानव की एक जन्मजात स्वाभाविक प्रवृत्ति सामाजिकता है। आदि काल में समाज के अभाव में मनुष्य का जीवन दुष्कर ही था क्योंकि मानव अकेला नहीं रहता है। वह समाज में रहने वाला एक सुसंस्कृत सामाजिक प्राणी है। सामान्य रूप से व्यक्तियों के समूह अथवा संगठन को ही समाज कहते है। समाज वास्तव में व्यक्तियों के पारस्परिक जागरूकता (Mutual Awareness) समानता व भिन्नता (Likeness and Dirferences) सहयोग व संघर्ष (Cooperation and conflict) तथा अन्योन्याश्रितता (Interdependence) पर आधारित सम्बन्धों के जाल या पुंज (Net work) को समाज कहा जाता है। समाज के सभी सदस्यों के मध्य मधुर तथा सहयोगात्मक सम्बन्धों का होना सम्भव नहीं है। समाज के कुछ

[1] पाठक, आर.पी. आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएँ एव समाधान, प्राक्कथन

पूर्व शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रियविश्वविद्यालय)बी–4, कतुब सांस्थानिक क्षेत्र, naveenarya226@gmail.com

सदस्यों के परस्पर सामाजिक सम्बन्ध कटु तथा संघर्षात्मक भी हो सकते हैं। प्रत्येक समाज सदैव क्रियाशील रहता है। प्रगतिशील समाज अपने अतीत के अनुभवों से प्रेरणा प्राप्त करके वर्तमान को सुधारने के लिए संघर्षशील रहता है, जिससे उसका भविष्य उज्जवल हो सके। यही कारण है कि प्रत्येक समाज में सामाजिक परिवर्तन होते रहते हैं। किसी भी समाज में सामाजिक परिवर्तन का होना एक स्वाभाविक तथा सतत प्रक्रिया मानी जाती है तथा शिक्षा इस दिशा में सार्थक योगदान देती है।

''समाज और शिक्षा में आपसी गहरा सम्बन्ध है शिक्षा के माध्यम से ही समाज का विकास होता है तथा समाज के माध्यम से शिक्षा का विकास होता है अत हम कह सकते हैं कि शिक्षा और समाज एक दूसरे पर निर्भर हैं।''[1]

- **सामाजिक परिवर्तन** (Social Change)

प्रत्येक समाज की अपनी एक विशिष्ट संरचना तथा निश्चित कार्यविधियाँ होती हैं जिनमें समय–समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। कुछ समाजों की संरचना तथा कार्यविधियों में होने वाले परिवर्तनों की गति तीव्र होती है, जबकि कुछ में होने वाले परिवर्तनों की गति मन्द होती है तथा उस समाज की संरचना तथा कार्यविधियों में होने वाले परिवर्तनों को ही सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य उस समाज की विभिन्न संस्थाओं तथा व्यक्तियों के मध्य परस्पर सम्बन्धों एवं उनके द्वारा स्वीकृत व्यवहार करने की विधियों में होने वाले परिवर्तना से है। कोई भी समाज परिवर्तनों से बच नहीं सकता है।

''प्रारम्भ में मानव की सामाजिक और सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति प्रदान करने का जो सांकेतिक रूप था, उसको विवरणात्मक रूप परवर्ती युग में मिला।''[2]

किसी समाज में परिवर्तन सामाजिक परिवर्तनों द्वारा ही होते हैं। यहाँ यह कहना सत्य ही होगा कि प्रत्येक समाज में परिवर्तन अवश्य होते हैं, अन्तर केवल परिवर्तन की दर (Extent) तथा परिवर्तन की दिशा (Direction) का होता है। सामाजिक परिवर्तन की दर

[1] पाठक, आर.पी, शिक्षा–सिद्धान्त, पृ.– 27
[2] मिश्र, प्रो. भास्कर, शिक्षक और समाज, पृ.– 18

तथा दिशा अनेक कारणों से प्रभावित होती है। सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारण हैं–

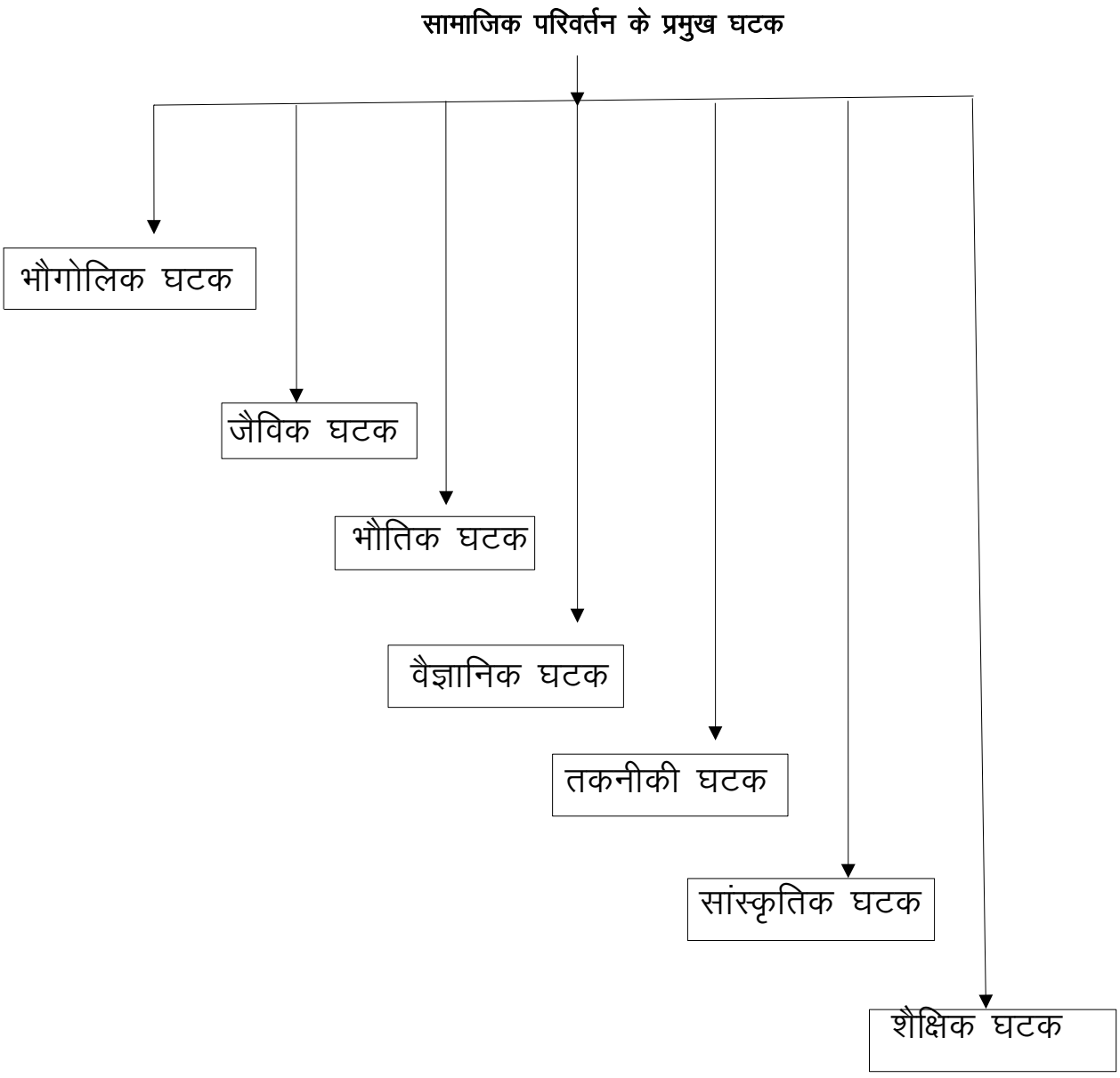

पूर्व शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रियविश्वविद्यालय)बी–4, कतुब सांस्थानिक क्षेत्र, naveenarya226@gmail.com

समाजिक परिवर्तन तथा शिक्षा में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। शिक्षा परिवर्तनों की प्रक्रिया को वांछित दिशा में प्रोत्साहित करती है, जबकि सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरूप शिक्षा–व्यवस्था में समयानुकूल आवश्यक परिवर्तन आते हैं। शिक्षा को नियोजित ढंग से समाज में वांछित परिवर्तन लाने का एक सशक्त माध्यम स्वीकार किया जाता है। समाज अपनी आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति शिक्षा के द्वारा ही करता है। समाजशास्त्रियों के द्वारा शिक्षा को एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया स्वीकार किया गया है जिसके द्वारा समाज अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तथा प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने हेतु नागरिकों में ऐसे विचारों को प्रस्फुटित करता है। जो समाज में विभिन्न प्रकार के वांछित परिवर्तन लाने में सहायक हो सकें। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्तियों के ज्ञान, रुचि, मूल्य, विचार–प्रक्रिया, अभिवृत्ति आदि को इस प्रकार से वांछित दिशा में मोड़ा जाता है कि वांछित सामाजिक परिवर्तन लाने का मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक मूल साधन है।

- **सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका** (Role of Education in social change)

मानव के द्वारा सभ्यता के विकास की प्रक्रिया पर विचार करने से सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षा के द्वारा अदा की जाने वाली सशक्त भूमिका स्पष्ट हो जाती है। व्यक्ति अपने समाज की भाषा, रहन–सहन, खान–पान, रिति रिवाजों, मूल्यों, आदर्शों, मान्यताओं, विश्वासो, परम्पराओं आदि कि जानकारी शिक्षा के द्वारा ही करता है। यही कारण है कि समाज के नवांगतुक सदस्यों को सामाजिक स्वरूप का ज्ञान तथा चेतना प्रदान करने के लिए सभी सभ्य समाज औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था करते हैं। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का मानसिक विकास होता है तथा वह अपने सम्बन्ध में, अपने समाज के सम्बन्ध में, अपने राष्ट्र के सम्बन्ध में और सम्पूर्ण विश्व के सम्पूर्ण विश्व के सम्बन्ध में चिन्तन करने योग्य बनता है। शिक्षा के अभाव में कोई भी नागरिक अपने समाज की आवश्यकताओं परिस्थितियों तथा समस्याओं को उचित ढंग से समझने में असफल रहता है। एक अशिक्षित व्यक्ति सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा समस्याओं के समाधान के लिए तर्कसंगत चिन्तन समुचित ढंग से नहीं कर पाता है।

इतिहास के पन्नों पर दृष्टिपात करने से यह बात सत्य प्रतीत होती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, हो रहे हैं, तथा भविष्य में भी

पूर्व शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रियविश्वविद्यालय)बी–4, कतुब सांस्थानिक क्षेत्र, naveenarya226@gmail.com

होते रहेंगे। किसी और देश की बात रहने दीजिए, अपने देश की ही बात करें। बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का अशोक महान पर क्या प्रभाव पड़ा, इससे हम सभी अच्छी तरह परिचित है। मुगलों ने भी अपने शासन को सुदृढ़ बनाने हेतु भारतीय समाज को अपने अनुकूल परिवर्तित करने के कार्य में शिक्षा का ही उपयोग किया। अंग्रेजों ने पढ़े–लिखे बाबू तैयार करने के लिए शिक्षा का प्रावधान किया। उसने भारतीयों के दृष्टिकोण में भारी परिवर्तन किये, जिसके परिणामस्वरूप तत्कालीन भारतीय समाज में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन आए। धार्मिक अंधविश्वासों तथा जातीय संकीर्णता की भावना को इसी शिक्षा के द्वारा अनेक सामाजिक परिवर्तनों को लाने में सफलता मिली। नारियों की स्थिति में सुधार लाने, छुआ–छूत को समाप्त करने तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने में शिक्षा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

डॉ.दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता वाले कोठारी आयोग (1964–66) ने शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास नामक अपने चिरपरिचित प्रतिवेदन में कहा है कि–

'उचित शिक्षा ही ऐसा साधन है जो राष्ट्रीय विकास में सहायक हो सकती है।' कोठारी आयोग ने यह भी कहा है कि 'इतिहास में अनेक ऐसे मामले मिलते हैं..... जिनमें शिक्षा के माध्यम से किसी प्रणाली में सामाजिक और सांस्कृतिक क्रान्ति लाई गई..... राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा का सोद्देश्य प्रयोग किया जाता है।'

भारत सरकार के द्वारा सन् 1985 में जारी ''शिक्षा की चुनौती : नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य'' नामक दस्तावेज में भी कहा गया था कि–

''मानव के इतिहास में शिक्षा मानव समाज के विकास के लिए एक सतत क्रिया और आधार रही है। मनोवृत्तियों, मूल्यों तथा ज्ञान व कौशल दोनों को ही क्षमताओं के विकास के माध्यम से शिक्षा लोगों की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप बनाने के लिए उन्हें शक्ति और लचीलापन प्रदान करती है, सामाजिक विकास के लिए प्रेरित करती है तथा उसमें योगदान देने के योग्य बनाती है। निःसंदेह इतिहास से ज्ञात होता है कि राष्ट्रों के विकास में मानव संसाधनों द्वारा अदा की गई भूमिकायें महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।''

यद्यपि स्वतन्त्रता के उपरान्त भारतीय समाज में अनेक सुखद परिवर्तन आए हैं, परन्तु यह कहना शायद गलत ही होगा कि वर्तमान भारतीय समाज पूर्णरूपेण दोषरहित है।

पूर्व शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रियविश्वविद्यालय)बी–4, कतुब सांस्थानिक क्षेत्र, naveenarya226@gmail.com

हमारे समाज में अनेक बुराइयाँ अभी भी विद्यमान है। जातीयता, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता, भाषायी अलगाव, धार्मिक उन्माद, आतंकवाद, नैतिक मूल्यों में गिरावट, उत्पादन में कमी, नगरों की ओर अंधाधुन्ध पलायन, रिश्वतखोरी, भाई–भतीजावाद, राजनैतिक भ्रष्टाचार, हड़ताल, तालाबन्दी, दंगे जैसी अनेकानेक विकराल समस्यायें हमारे सम्मुख खड़ी हुई है। इन समस्याओं के उत्पन्न होने तथा समाप्त न होने का प्रमुख कारण अधिसंख्य नागरिकों में शिक्षा का अभाव है। सामाजिक प्रगति के लिए नवीन सामाजिक प्रतिमानों के विकास की आवश्यकता है। शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न व्यक्तियों का दायित्व है कि वे इस कार्य के लिए आगे आयें। स्वतन्त्रता के उपरान्त के विगत छह दशकों में शिक्षा का संख्यात्मक विकास तो काफी हुआ है परन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से शिक्षा का ह्रास हुआ है। सरकारी दस्तावेजों में शैक्षिक आकड़ों को बढ़ा चढ़ा कर दिखाने की प्रवृत्ति के कारण शिक्षा की गुणवत्ता की ओर ध्यान देने की आवश्यकता को कम करके आँका गया है। आज भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षित व्यक्ति को सम्मानजनक स्थान देने की परम्परा भी धीरे–धीरे समाप्त हो गयी है। परिणामतः देश एक ऐसे दोराहे पर आकर खड़ा हो गया है कि उसे सम्मानजनक ढंग से आगे बढ़ने का मार्ग दृष्टिगोचर ही नहीं हो रहा है। समाज नैतिक पतन की खाई में गिरता जा रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम राष्ट्र के सभी कर्णधारों को ऐसी शिक्षा प्रदान करें कि वे एक आदर्श, प्रगतिशील, आत्मनिर्भर तथा नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण सौहार्द्र की भावना से ओतप्रोत, राष्ट्र गौरव के संकल्प से युक्त एक स्वाभिमानी समाज की रचना करने में सक्षम हो सकें। एक ऐसे समाज की स्थापना करना हम सभी देशवासियों का उद्देश्य होना चाहिए जो विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में अग्रगण्य हो, जिसमें सुख–सुविधाओं के वितरण में समानता हो, जिसमें सभी को समानाधिकार हो, तथा जिसके नागरिक उच्च नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हों।

हमें एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें स्वास्थ्य, अवकाश, व्यवसाय तथा धरेलू जीवनचर्या के क्षेत्र में नवीन, आधुनिक जीवन–पद्धति को अपनाने के प्रति रुझान हो। यह कार्य नियोजित शिक्षा के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। शिक्षा का सहारा लेकर देश के नागरिकों में भावात्मक एकता, धार्मिक सहिष्णुता, राष्ट्रीय समाकलन, अन्तराष्ट्रीय अवबोध, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन की भावना को विकसित करना होगा जिससे पूर्वाग्रहों तथा भेदभाव से रहित एक ऐसा समाज तैयार हो सके जो अज्ञानता व रूढ़ियों से मुक्त हो, असुरक्षा

पूर्व शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रियविश्वविद्यालय)बी–4, कतुब सांस्थानिक क्षेत्र, naveenarya226@gmail.com

व बेरोजगारी का नामोनिशान न हो तथा जिसके नागरिक जनहित में व्यक्तिगत हितों व स्वार्थों का त्याग करने के लिए तत्पर हों। शिक्षा ही व्यक्ति को अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का बोध कराती है। शिक्षित व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों को ठीक ढंग से समझकर उनका स्वेच्छा से पालन करते है। शिक्षित व्यक्ति ही अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहते हैं।

शिक्षा के अभाव में व्यक्ति न तो अपने कर्त्तव्यों को ठीक ढंग से समझ पाता है न ही अपने अधिकारों व सुविधाओं का समुचित ढंग से उपयोग कर पाता है। व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की आर्थिक उन्नति, खुशहाली तथा समृद्धि लाने की दिशा में शिक्षा अत्यंत सार्थक भूमिका अदा कर सकती है।

- **सामाजिक परिवर्तन में अध्यापक का योगदान** (Contribution of Teachers in Social Changes)

यद्यपि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों में से एक है, वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान का प्रसार एवं जनसंचार जैसे अनेक अन्य साधन भी सप्रयास वांछित सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। परन्तु सप्रयास वांछित सामाजिक परिवर्तन लाने का सर्वाधिक सरल तथा प्रभावशाली साधन शिक्षा ही हैं। शिक्षा के द्वारा वांछित दिशा में स्थायी सामाजिक परिवर्तन लाये जा सकते है, जबकि अन्य साधन अनपेक्षित तथा अवांछित सामाजिक परिवर्तन भी लाते है। जो प्रायः समाज की प्रगति तथा विकास के लिए घ ाातक होते है। शिक्षा के द्वारा वांछित सामाजिक परिवर्तन लाने के इस महाकार्य में शिक्षा–संस्थाओं तथा अध्यापकों को महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी होगी। यदि हमारे अध्यापकगण संकल्प कर लें तो देशे में किसी प्रकार का सामाजिक परिवर्तन सरलता से लाया जा सकता है तथा गौरवशाली विकसित भारत के निर्माण का स्वप्न साकार हो सकता है। इतिहास साक्षी है कि अध्यापकों ने सदैव ही वांछित सामाजिक अभियन्ता (Social Engineer) के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। परन्तु यह किंचित खेद का विषय है कि आज का अध्यापक अपने सामाजिक दायित्वों को ठीक ढंग से पूरा नहीं कर रहा है। सामाजिक परिवर्तन के प्रश्न पर वह प्रायः मौन ही रहता है। कक्षा में छात्रों के सम्मुख पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत करने मात्र को वह अपने शैक्षिक कर्त्तव्यों की इतिश्री समझ लेता है। सम्भवतः यही कारण है कि आज

अध्यापकों ने समाज में अपना सम्मानजनक स्थान खो दिया है, जो पहले कभी था। यदि अध्यापकगण समाज में अपने खोए हुए सम्मानजनक स्थान को पुनः प्राप्त करना चाहते है तो उन्हें सामाजिक परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं को भलीभाँति समझना होगा तथा वांछित सामाजिक परिवर्तन लाने में अपना भरपूर योगदान करना होगा। निःसंदेह वर्तमान समय में शिक्षा के लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के इस दायित्व को कैसे पूरा करे, इस पर विचार करके उचित मार्ग खोजना होगा। शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न प्रबुद्ध तथा जागरूक व्यक्ति इस कार्य को पूरा कर सकते हैं, ऐसी आशा है। आवश्यकता केवल प्रयास करने की है। शिक्षक सामाजिक परिवर्तन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करके इस दिशा में सार्थक योगदान कर सकते हैं।

उपसंहार

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में अन्य मानवों के साथ मिल जुलकर रहता है। पारस्परिक जागरूकता, समानता व भिन्नता, सहयोग व संघर्ष तथा परस्पर निर्भरता पर आधारित सम्बन्धों से युक्त व्यक्तियों के संगठन को समाज कहा जाता है। किसी भी समाज में परिवर्तनों का होना स्वाभाविक व सतत प्रक्रिया होती है। कुछ समाजों में होने वाले परिवर्तनों की गति तीव्र होती है तथा कुछ समाजों में परिवर्तनों की गति मन्द होती है। सामाजिक परिवर्तन अनेक कारकों से प्रभावित होता है। शिक्षा को वांछित सामाजिक परिवर्तन लाने का एक सशक्त साधन स्वीकार किया जाता है। शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करके व्यक्तियों की रूचियों, विचारों, मूल्यों, दृष्टिकोणों आदि में सकारात्मक परिवर्तन लाये जा सकते हैं। शिक्षा एवं अध्यापकगण इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान निभाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. गुप्ता, एस.पी. भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण– 2012
2. पाठक, आर.पी., आधुनिक भारतीय शिक्षा संस्थाएँ एवं समाधान, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2010
3. पाठक, आर.पी., शिक्षा सिद्धान्त, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2014

4. भट्टाचार्य, डॉ.जी.सी., अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, षष्ठ संस्करण–2011
5. मिश्र, प्रो. भास्कर, शिक्षक और समाज, नाग पब्लिशर्स, नई दिल्ली प्रथम संस्करण–2002
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
7- लाल, प्रो. रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार, आर.लाल बुक डिपो मेरठ

पूर्व शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रियविश्वविद्यालय)बी–4, कतुब सांस्थानिक क्षेत्र, naveenarya226@gmail.com